Environmental Protection and Social Work Profession

[Proceeding With Full Paper]

Editors

Dr Bijendr Pradhan
Dr Pushpa Mishra
Mr Ankit Sharma
Dr Vikas Sharma

Scanned by CamScanner

Environmental Protection and Social Work Profession
[Edited Book]

ISBN: 978-93-83634-45-3

© Editing Teem -2019

Editors: Dr. Bijendr Pradhan, Dr. Pushpa Mishra
Mr. Ankit Sharma, Dr. Vikas Sharma

Co-editors: Mr. Ranjit Kumar Jaiswal Mr. Indra Ram Poonia

First Edition: March, 2019

Price: 350/-

Published by: Department of Social Work
Jain Vishva Bharati Institute,
Ladnun-341306 (Rajasthan)

Printed by:

No part of this book may be reproduced or transmitted any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system, without permission in writing from the publishers.

Cover Page Photo Credits:
https://www.instagram.com/p/BtTV1koHYVX/?utm_source=ig_share_sheet&igshid=1svv9176cp9a

Scanned by CamScanner

17.	Migration Induced by Climate Change: Policies and Actions.		
18.	Climate Change : A Global Threat and The Role of Social Worker	Dr. A. K. Bhartiya Samra Anwer	141-149.
19.	Exploring Innovations in Policy for Agriculture Bioinformatics and Cultivation of Scientific and Sustainable Skills in India	Diwakar Kumar	150-155
20.	Monoculture and polyculture impacts on biodiversity	Jiya Choudhary	156-162
21.	Environment protection & role of social workers	Gaurav Dixit	163-170
22.	Psychiatric Problems Of Elderly	Ambrish Kumar Rai	171-176
	हिन्दी खण्ड		
23.	भगवान महावीर का पर्यावरण दर्शन	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	191-194
24.	प्रदूषण : एक गम्भीर समस्या	कु. अपराजिता, छात्रा	195-198
25.	वन संरक्षण में जनजातीय समुदाय की सहभागिता	डॉ बिजेन्द्र प्रधान कृष्ण कुमार तिवारी	199-204
26.	पर्यावरण संरक्षण में समाज कार्य की पद्धतियों का प्रयोग	डॉ. लालाराम जाट	205-210
27.	ई–अपशिष्ट–एक पर्यावरणीय समस्या एवम उसका प्रबन्धन।	डॉ. विकास शर्मा	211-214
28.	पर्यावरण संरक्षण एवं वैश्विक राजनीति	डॉ. जुगल किशोर दाधीच	215-220
29.	पर्यावरण संरक्षण और जन चेतना	डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़	221-226
30.	पर्यावरण संरक्षण में पर्यावरण शिक्षा एवं समाजकार्य कर्ता की भूमिका	डॉ. आभा सिंह	227-230
31.	पर्यावरण संरक्षण और अहिंसा	डॉ. हेमलता जोशी	231-234
32.	जैनदर्शन और पर्यावरण–संरक्षणःएक अध्ययन	डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज	235-238

Scanned by CamScanner

जैनदर्शन और पर्यावरण-संरक्षण : एक अध्ययन

डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज

सहायक आचार्य, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

ब्रह्माण्ड के समस्त जीवधारियों के समुचित विकास एवं सुव्यवस्थित जीवनक्रम को चलाने के लिए संतुलित पर्यावरण की आवश्यकता होती है। जैनदर्शन में पर्यावरण की समग्रता का स्वरूप उपलब्ध होता है। पर्यावरण के आधुनिक सम्प्रत्यय में मानव–जगत को परिवेष्टित करने वाले पशु–पक्षी, वन, नदी–नाले आदि जलाशय, पर्वत, हवा एवं ध्वनि की सुरक्षा का विचार हुआ है। परन्तु जैनदर्शन इससे बढ़कर सम्पूर्ण प्राणी–जगत की सुरक्षा एवं संरक्षण का विचार करता है। इसके साथ ही भौतिक–अभौतिक पर्यावरण रूप से इसके भेद करके जैनदर्शन ने अभौतिक पर्यावरण को आधारभूत मानकर उसकी सुरक्षा का विचार किया है। अभौतिक पर्यावरण आन्तरिक पर्यावरण में मानव–मन की वृत्तियों, सेवा, प्रेम, बन्धुता, सहयोग, सहनशीलता जैसे मानव–मूल्यों को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है, जिनके अभाव में भौतिक पर्यावरण की सुरक्षा की सफलता एक स्वप्न बनकर ही रह सकती है।

पर्यावरण–असन्तुलन के मुख्य कारण

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण का महत्त्व शुरू से ही रहा है। प्रारम्भ में मानव पर्यावरण के साथ अंगीभूत था। उसने प्रकृति के साथ अपना समन्वय बैठा रखा था तथा कभी भी उसमें परिवर्तन की चेष्टा नहीं की थी। बीसवीं सदी के आते–आते मानव के द्वारा भौतिक, आर्थिक एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अप्रत्याशित गति करने की चेष्टा ने पर्यावरण को प्रदूषित कर एक समस्या को पैदा कर दिया। आज पूरा विश्व इससे चिंतित है, समाधान ढूंढने का प्रयास कर रहा है।

पर्यावरण असंतुलन के अनेक कारणों को यदि जैनदर्शन की दृष्टि से एक शब्द में कहा जाए तो वह है– असंयम। भगवान महावीर ने सत्रह प्रकार के संयम की बात कही है।[1] उनमें जीव–संयम और अजीव–संयम दोनों प्रकार के संयम को महत्त्व दिया गया। इन सत्रह प्रकार के संयम में नौ प्रकार का संयम षड्जिवनिकाय से संबधित है। जो इनका संयम नहीं करता वह पर्यावरण को तो प्रदूषित करता ही है किन्तु स्वयं के भी अबोधि और अहित का कारण बनता है। असंयम के अतिरिक्त पर्यावरण असंतुलन के अन्य निम्नलिखित कारण है–

1. प्राकृतिक संसाधनों का अभाव।
2. प्रकृति का अत्यधिक दोहन।
3. कृत्रिम आवश्यकताएं।
4. उपभोक्तावादी संस्कृति।
5. लोभ की प्रवृत्ति।
6. सुविधावादी मनोवृत्ति।
7. विकास के भ्रामक मापदण्ड आदि।

पर्यावरण–संरक्षण के मूलभूत उपाय

आज विश्व में असंतुलित पर्यावरण की गंभीर समस्या है, जो समाज के सभी वर्गों के लोगों को सोचने के लिए मजबूर कर रही है। ऐसी आशंका व्यक्त की जा रही है कि इस क्षेत्र में यदि प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो आने वाले वर्षों में मनुष्य के लिए जिन्दा रहना भी मुश्किल हो जाएगा। मानव–विकास के लिए स्वच्छ एवं संतुलित पर्यावरण की महती आवश्यकता है।

भगवान महावीर ने 2600 वर्ष पूर्व जो जीने का दर्शन दिया, उसमें पर्यावरण–संतुलन और सृष्टि–संतुलन की दृष्टि से अनेक महत्त्वपूर्ण सूत्र उपलब्ध होते हैं। भगवान महावीर अहिंसा के प्रयोक्ता थे। उन्होंने

Scanned by CamScanner